Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(5), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

प्रवासी हिंदी साहित्य के नए मानक

दत्ता कोल्हारे

निवास : ए–4, संजय नगर (जिन्सी),

छत्रपति संभाजीनगर (महाराष्ट्र) 431001

दूरभाष 9860678458

dattafan@gmail.com

हिंदी के एक चर्चित उपन्यास के संदर्भ में यह बात सुनी थी कि, इसे पढने के लिए देश–विदेश के लोगों ने – जो हिंदी नहीं जानते थे – हिंदी भाषा सीखीं। यह उस लेखक के उपन्यास लेखन कला और हिंदी भाषा की प्रसिद्धि का फल ही हैं कि, लोगों को इसे पढने के लिए हिंदी भाषा को सिखना पडा। पिछले कुछ दशकों से हिंदी के प्रचार–प्रसार में साहित्य के अलावा हिंदी सिनेमा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। 80–90 के दशक में हिंदी सिनेमा का प्रसारण विदेशों में होने लगा। इसका सर्वाधिक लाभ हिंदी भाषा को हुआ। भारत के बाहर अन्य देशों में भी 'हिंदी' समझी और बोली जाने लगी। विदेशों में स्कूली पाठ्यक्रमों तथा विश्वविद्यालयों में भी हिंदी का अध्ययन–अध्यापन होने लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि आज विश्व में सबसे अधिक बोली जानेवाली भाषाओं में हिंदी अग्रीम पंक्ति में शामिल है। जनसंचार के आधुनिक संसाधनों द्वारा विश्व भर में हिंदी का प्रचार–प्रसार तीव्र गति से हो रहा है। हिंदी के विकास में अनिवासी भारतीयों का योगदान भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। अपनी मातृभूमि से दूर रहकर भी यह लेखकगन हिंदी के विकास में अपना योगदान दे रहे हैं। विदेश में रह रहें इन्हीं भारतीयों के कारण न सिर्फ हिंदी भाषा वरन् हिंदी साहित्य भी विश्वभर में फैल रहा है। विदेशों में अनिवासी भारतीयों द्वारा लिखित यह साहित्य आज 'प्रवासी हिंदी साहित्य' के नाम से देश–विदेश में प्रसिद्ध हो रहा है।

वर्तमान में हिंदी साहित्य की विभिन्न शाखाओं में 'प्रवासी हिंदी साहित्य' अपनी जगह बनाने में प्रयत्नरत है। वैश्वीकरण के दौर मे आधुनिक संसाधनों जैसे इंटरनेट, सोशल मीडिया आदि की सहज उपलब्धता के कारण हिंदी भाषा की जडें विदेशों में भी फैल चुकी हैं। हिंदी साहित्य के विराट वटवृक्ष की मजबूती हेतु उसकी सभी शाखाओं को समान रूप से संपन्न होना जरुरी है। भारत के बाहर अन्य देशों में हिंदी भाषा एवं साहित्य को पल्लवित करने का काम विदेशों में बसे प्रवासी भारतीयों द्वारा किया जा रहा है। यही कारण है कि वैश्विक पटल पर हिंदी साहित्य अपनी पहुँच बनाने में सफल हो रहा है। विश्व स्तर पर हिंदी के बढते कदम को

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(5), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

दर्शाते हुए डॉ. दिग्विजय कुमार शर्मा लिखते हैं, ''वर्तमान समय में हिंदी भाषा भारत में ही नहीं, अपितु विदेशों में रहने वाले अधिकांश भारतवासियों की भाषा है। यह केवल भारत की सीमाओं में ही कैद होकर नहीं रह गयी, वरन् एक बडी संख्या में सरहद पार भी हिंदी भाषा का साहित्य अपने पंख पसार रहा है, वह भी नये रूप–रंग में, क्योंकि आज भूमंडलीकरण, सूचना तकनीकी, उपभोक्तावाद एवं बाजारवाद तथा उत्तर आधुनिकता, डिजीटलीकरण का युग है।''[1]

प्रवासी हिंदी साहित्य के स्वरूप और संकल्पना को विविध विद्वानों ने अपनी–अपनी तरह से स्पष्ट करने का प्रयास किया है। जैसे – 'विदेशों में लिखें जा रहे साहित्य' को प्रवासी साहित्य कहा गया तो किसी ने 'प्रवास में लिखें गए साहित्य को' प्रवासी साहित्य से व्याख्यायित किया है। इस तरह के भिन्न–भिन्न मतों के कारण प्रवासी हिंदी साहित्य हमेशा चर्चा एवं वाद–विवाद का विषय रहा है। समग्र रूप से प्रवासी हिंदी साहित्य को निम्न रूप से विभाजित कर देखा जाता हैं।

1) विदेशी हिंदी साहित्य (फारेनर्स रिटेन) – अभारतीय : मूल रूप से विदेशी

2) गिरमिटिया साहित्य – जो लोग स्वतंत्रता पूर्व ब्रिटिश आदि द्वारा शर्तबंदी के तहत विदेशों में ले जाए गए और वही बस गए उन्हें गिरमिटिया मजदूर कहा जाता है। ऐसे लोगों द्वारा रचित साहित्य को 'गिरमिटिया साहित्य' कहा जाता है।

3) अप्रवासी हिंदी साहित्य – जो लोग पढ–लिखकर व्यापार और नौकरी आदि के सिलसिले में चार–पांच दशकों से विदेश में रह रहे हैं उनका स्वदेश वापसी का कोई इरादा नहीं। इन लोगों द्वारा रचित साहित्य 'अप्रवासी हिंदी साहित्य' कहा जाता है।

आज हम देखते हैं कि इन सभी के मिश्रित रूप को हम प्रवासी साहित्य कहते है। परंतु इस भ्रमजाल से हमें बाहर निकलना होगा। क्योंकि ऊपर उल्लेखित प्रथम दो बिंदुओं में रचित साहित्य आज 'प्रवासी हिंदी साहित्य' की परिधि में नहीं आता, वह इससे पूर्णतः भिन्न एवं अलग है। उनका भाव क्षेत्र, संवेदनाएँ, अनुभूतियाँ तथा व्याकरण प्रवासी साहित्य से भिन्न है। उदाहरण के रूप में 'गिरमिटिया साहित्य' को देखें तो उनका भाव विश्व, अनुभव क्षेत्र अलग है। उनकी कलम अपने ऊपर हुए अत्याचारों तथा पीडाओं को अभिव्यक्त करती है। जिन परिस्थितियों में उन्हें अपने देश से किसी अनजाने जगह पर गुलाम बनाकर ले जाया गया था, गुलामों की तरह उन पर जो अन्याय–अत्याचार हुए उन पीडाओं की दास्ताँ हैं, गिरमिटिया साहित्य। परंतु वर्तमान में परिस्थिति इससे एकदम भिन्न है। आज इन गिरमिटिया देशों के वे एक सभ्य नागरिक है। उनकी तिसरी–चौथी पीढी वहाँ निवास कर रही है। उनका अनुभव क्षेत्र अपने दादा–परदादाओं के अनुभवों से

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(5), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

एकदम भिन्न है, उनकी समस्याएँ तथा वर्ण्य विषय अलग हैं। इस कारण 'गिरमिटिया साहित्य' एवं 'प्रवासी साहित्य' दो भिन्न–भिन्न संकल्पनाएँ है। प्रवासी हिंदी साहित्य के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए डॉ. दिग्विजय कुमार शर्मा लिखते हैं कि, ''इसे विद्वानों द्वारा दो भागों में विभाजित कर देखा गया है। एक वर्ग वह जो कई सौ वर्ष पुराना दर्द समेटे हुए है, जब भारत में अंग्रेज, डच, फ्रेंच आदि का शासन था। अपने उपनिवेशीय देशों से हजारों की तादाद में भारतीय मजदूरों को छल–कपट के साथ गिरमिटिया मजदूर बनाकर ले गये। वे लोग अपने साथ रामचरितमानस, गीता, हनुमान चालीसा जैसे धार्मिक ग्रंथों को साथ ले जाकर अपने अस्तित्व और अस्मिता की रक्षा की। ये वे शर्तबंदी मजदूर थे जो कि पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार आदि प्रदेशों से गये जिनकी भाषा भोजपुरी थी। इसके शोषण और पीडा से निकले स्वर जिनको आने वाली पीढी ने कविता–कहानियों के माध्यम से व्यक्त किया है। दूसरा वर्ग 19वीं शताब्दी से 21वीं शताब्दी तक भारत के अधिकांश देशों से शिक्षित युवकों का इंग्लैंड, कनाडा, अमेरिका जैसे दुनिया के विभिन्न देशों में अर्थ, शिक्षा, व्यापार के लिए जाना आरंभ हुआ और वे वहाँ नौकरी–व्यापार करते हुए वहीं बस गये। यह वर्ग स्वेच्छा से विदेश गया और अपनी भारतीय अस्मिता, संस्कृति, संस्कार को अपनी मातृभाषा हिंदी में अभिव्यक्त करता रहा।''[2]

डॉ. अजय नावरिया के विचार भी इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। वे लिखते हैं, ''प्रवासी साहित्य को यदि विभक्त करें तो दो तरह का साहित्य हमारे सामने आता है। पहला साहित्य वह जो विदेशों में रह रहे प्रवासियों की दूसरी या तीसरे पीढी द्वारा लिखा जाता है। इनके लिए भारत एक तीर्थ स्थल जैसा ही होता है। ऐसे लोग भारत आकर भी विदेशी हो जाते हैं। दूसरी प्रकार के प्रवासी वे हैं जो अपनी मर्जी से पढाई–लिखाई करके अपनी माली हालत बेहतर करने के लिए विदेश जाते हैं। यह सब पहली पीढी के प्रवासी हैं और इनका भारत से संपर्क लगातार बना रहत है।''[3]

विगत दशकों से 'प्रवासी हिंदी साहित्य' अपने संपूर्ण भावभूमि के साथ अभिव्यक्त हो रहा है। इसी कारण वह हमेशा से चर्चा में बना रहा है। हिंदी साहित्य के दलित, नारी, आदिवासी आदि विमर्शों के दौर में आज प्रवासी साहित्य अलग से चर्चा में हैं। प्रवासी साहित्य के सही मूल्यांकन को लेकर हमेशा से ही प्रश्न उठते रहे है। प्रवासी साहित्य के सौंदर्यशास्त्र और नये प्रतिमानों की आवश्यकताओं पर समय–समय पर मांग उठती रही हैं। आज भी 'प्रवासी साहित्य किसे कहा जाए?' तथा 'प्रवासी साहित्य को हिंदी साहित्य की मुख्यधारा का अंग माना जाए या नहीं?' ऐसे अनेकविध प्रश्न पहले भी उठें और आज भी उठते है। इन्हीं प्रश्नों को लेकर इसके समर्थन और विरोध में मत्थाफोड चर्चाएँ होती रहती हैं। परंतु इन प्रश्नों के

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(5), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

सही उत्तर आज तक कोई नहीं दे पाया। इस चर्चा का प्रतिफल यही रहा कि चर्चा करनेवाले (पक्ष–विपक्ष में) सदैव ही 'चर्चा' में बने रहते हैं।

हिंदी साहित्य में बने मठों और मठाधिशों के सीमित परिधि के कारण प्रवासी साहित्य का मूल्यांकन मध्ययुगीन परिपाटी पर ही किया जा रहा है। जैसे – आज के प्रवासी साहित्य में नास्टेलेजिया तथा देश की स्मृतियां आदि को ढूंढा जाना। आज जिस तरह दलित, स्त्री या आदिवासी आदि विमर्शों को परखने का सौंदर्यशास्त्र बदल गया है, उसी तर्ज पर प्रवासी साहित्य नया सौंदर्यशास्त्र गढा जाना आवश्यक है। क्योंकि आज के प्रवासी साहित्य का स्वर अपनी मातृभूमि की याद या स्वजनों की स्मृतियों तक सीमित नहीं रहा है। क्योंकि वर्तमान पीढी का प्रवासी गुलाम बनकर विदेशों में नहीं जा रहा हैं बल्कि, वह अपनी मर्जी से पढाई हेतु या व्यवसाय–व्यापार हेतु कमाई करने के लिए गया है और सुख–चैन से अपना जीवन जी रहा है। मुख्य बात यह है कि उस देश की नागरिकता भी उसने स्वीकार की है। ऐसे सुविधाभोगी रचनाकार की सोचने की क्षमता, लिखावट का कथ्य तथा अनुभवों को अभिव्यक्त करने का ढंग अपने पूर्वजों से एकदम अलग, भिन्न एवं नया है। इसी भिन्नता के चलते उसकी कृति को देखने–परखने–मूल्यांकन हेतु नये प्रतिमानों की आवश्यकता है। कमलेश्वर के विचार इस बारें में दृष्टव्य हैं। उन्होंने रहमान मुसव्विर को दिए साक्षात्कार में वे कहते हैं कि, ''जिस प्रकार हिंदी साहित्य में सुदूर देश के समाज और संस्कृति प्रतिबिम्बित हो रही हैं, इससे हिंदी भाषी लोगों का ही नहीं बल्कि साहित्य के अनुभव का भी दायरा बढता है, फैलता है और इस रूप में मुझे लगता है जिसका लगातार स्वागत किया जाना चाहिए।''[4]

उत्तर आधुनिकता के दौर में तमाम अस्मितामूलक विमर्शों के साथ–साथ साहित्य जगत में हाशिये पर रहे विविध विमर्शों को साहित्य की मुख्यधारा में लाने की बात कहीं जा रही है। परंतु इस कार्य में उन विमर्शों की परिधि को निश्चित करना आवश्यक हैं। इस कार्य में रचनाकारों के साथ–साथ आलोचकों का सहयोग भी आवश्यक है। आज इसी चीज का अभाव हमें दिखाई देता हैं। इसी अभाव के कारण ही 'प्रवासी हिंदी साहित्य' हमेशा ही हाशिये पर रहा है। हालाँकि इसे परखने वाले इसे दो वर्गों में विभाजित कर देखते हैं – विदेशों में रचित हिंदी साहित्य को प्रवासी साहित्य माना जाए? या देश में ही प्रवासी व्यक्ति द्वारा 'प्रवास' को उद्घाटित करनेवाली रचनाओं को? इस चर्चा में प्रथम वर्ग का पलडा भारी रहा है। इसी बात के चलते कुछ आलोचक मॉरीशस आदि खाडी देशों तक के साहित्य को प्रवासी साहित्य के रूप में सीमित करते दिखाई देते है। परंतु आधुनिकता के चलते लोगों का ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा तथा अन्य खाडी देशों में आना–जाना बढ गया है। इसके चलते इन देशों में भी साहित्य सृजन विपूल मात्रा में किया जा रहा हैं। और हमारे लिए यह बात आनंद की अनुभूति देने वाली है कि कुछ आलोचकों का

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(5), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

ध्यान इस साहित्य की ओर भी गया है। इस नये साहित्य के परिधि को परिभाषित करते हुए आलोचक डॉ. कमलकिशोर गोयनका लिखते हैं, ''हिंदी के इस साहित्य का रंग–रूप, उसकी चेतना, संवेदना एवं सृजन–प्रक्रिया भारत के हिंदी पाठकों के लिए एक नई वस्तु है, एक नए भावबोध एवं नए सरोकार का साहित्य है। एक नई व्याकुलता बेचैनी तथा एक नए अस्तित्व–बोध व आत्मबोध का साहित्य है जो हिंदी साहित्य को अपनी मौलिकता एवं नए साहित्य संसार से समृद्ध करता है।''[5]

डॉ. गोयनका के बात को अगर हम गौर से देखें तो उन्होंने जिन बिंदुओं की और ध्यान आकर्षित किया है उससे प्रवासी साहित्य की ओर देखने–परखने की दृष्टि बदल जाती है। प्रवासी साहित्य की नयी परिधि एवं नये प्रतिमान उभरकर आते है। डॉ. गोयनका ने प्रवासी साहित्य के नये रंग–रूप, चेतना, संवेदना एवं सृजन–प्रक्रिया की भिन्नता की बात कहीं है। प्रवासी रचनाकारों ने देश की सीमाओं को लाँघ कर जो कुछ देखा, अनुभव किया उससे उनकी दृष्टि में विस्तार हुआ। इसी विस्तारित दृष्टि के कारण उनमें विषय, कथ्य तथा अभिव्यक्ति के स्तर पर नविनता दिखाई देती है, जो प्राचीन भारतीय साहित्य परंपरा से एकदम भिन्न एवं नयी हैं। इसी कारण यह प्रवासी साहित्य ऐसे नये विषय–वस्तु, नये भावबोध एवं नये सरोकारों को लेकर हमारे सामने प्रस्तुत होता है जिससे हम सब अब–तक अनभिज्ञ थे। रहीं बात प्रवासी साहित्य में अभिव्यक्त व्याकुलता, बेचैनी और अस्तित्व–बोध की तो प्रवासी रचनाकार जब एकदम अनजानी जगह पर जाता है तो वहाँ के वातावरण से संतुलन बनाने में उसे जो कठिनाईयाँ आती है, परिस्थितियों से तादात्म्य स्थापित करने में जो उसके मन की कश्मकश होती है, उसकी अभिव्यक्ति प्रवासी साहित्य में दिखाई देती है। इन्हीं बातों के चलते आज प्रवासी साहित्य की मौलिकता में वृद्धि हुई है। प्रवासी साहित्य के समृद्ध होते संसार के कारण हमें प्रवासी साहित्य को देखने में पुरानी प्रतिमान बदलने की आवश्यकता है।

प्रवासी हिंदी साहित्य का नाम आते ही हमारे सामने एक प्रतिकृति उभरकर आती है – 'अतीत की घटनाओं का स्मरण' अर्थात 'नॉस्टेल्जिया'। प्रवासी साहित्य के आरंभिक दौर में नॉस्टेल्जिया का प्रभाव अत्याधिक मात्रा में था। परंतु काल–स्थिति बदलते ही प्रवासी साहित्य नॉस्टेल्जिया से मुक्त होता हुआ हमें दिखाई देता है। प्रवासी रचनाकार आज अपने आस–पास के परिवेश तथा राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक स्थितियों से मेल स्थापित करने में संघर्षरत है। इस कारण प्रवासी साहित्य में आज हमें विदेशी वातावरण में जीवन ज्ञापन कर रहे पात्रों की मनोभूमि का चित्रण अधिक दिखाई देता हैं। साथ ही पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति से समायोजन स्थापित करने के चक्कर में अपने 'स्व' की रक्षा करता रचनाकार भी दिखाई देता है। इन सभी बातों के अलावा एक बात एक बात की कमी प्रवासी साहित्य में खटकती–सी दिखाई देती है कि, यह प्रवासी लेखक जिस

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(5), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

देश का निवासी है उस देश के राजनीतिक–सामाजिक विषमताओं पर टिका–टिप्पणी करने का साहस नहीं दिखा पाता।

प्रवासी हिंदी साहित्य के नए मानकों के अंतर्गत हम देखते कि इन रचनाकारों ने कथ्य एवं विषय के स्तर भारतीय एवं पाश्चात्य दोनों रूपों का चित्रण किया दिखाई देता है। प्रवासी साहित्यकार जिस देश में रह रहें हैं, उन देशों की संस्कृति तथा परिवेश आदि का जो चित्रण कर रहे हैं उनमें साम्य दिखाई देता है। अधितकर प्रवासी रचनाओं में भारतीय पर्व, त्यौहार, उत्सव आदि का चित्रण हुआ है। वर्तमान में हम देखते है कि अमेरिका और ब्रिटन जैसे देशों में जहाँ भारतीय अधिक संख्या में निवास करते हैं वहाँ भारतीय त्यौहार एवं पर्व आमतौर खुले रूप में मनाए जाते है। साथ ही होली आदि पर्व में स्थानीय नागरिक भी उल्लास एवं हर्ष के साथ शामिल भी होते है। इस तरह भारतीय संस्कृति के प्रचारक की भूमिका में प्रवासी साहित्यकार दिखाई देते है। 'वसुधैव कुटंबकम्' की संकल्पना को साकार करने का काम प्रवासी रचनाकारों का द्वारा अनपेक्षित रूप से हो रहा है।

प्रवासी हिंदी साहित्य में हम देखते हैं कि, वे भले ही विदेशों में अपने निजी उद्देश्य से गए हो परंतु वे सदैव ही वहाँ अपने भारत देश के 'सांस्कृतिक दूत' की भूमिका में रहते हैं। प्रवासी रचनाकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से इस भूमिका को अत्यंत कुशलतापूर्वक निभाया है। उनके साहित्य में भारतीय एवं पाश्चात्य दोनों संस्कृतियों के दर्शन हमें होते है।

भारतीय हिंदी साहित्य को हमने अपनी सुविधा की दृष्टि से विविध विमर्शों में विभाजित करके रखा है। प्रवासी साहित्य में अभी तक इस तरह का कोई विभाजन देखने में नहीं आता। प्रवासी साहित्य ने अपनी परिधि में रहकर विविध विषयों को लेकर लेखन किया है, अपने मानक एवं प्रतिमान स्वयं तय किए हैं। उदाहरण के लिए हम प्रवासी एवं भारतीय 'स्त्री साहित्य' का अध्ययन करें तो यह देख सकते हैं कि भारतीय स्त्री साहित्य अभी चौखट में कैद है। घर–परिवार के अत्याचारों तथा काम के क्षेत्र में हो रहे शोषण आदि का चित्रण मुख्य रूप भारतीय स्त्री चिंतन का विषय रहा है। धर्मसत्ता एवं पुरुषसत्ता की बेडियों में जकडी स्त्री स्वतंत्रता तथा समानता के अधिकार की माँग मुंह में घुलती–सी नजर आती है। भारतीय स्त्री विमर्श बहुतांश रूप में स्त्री के 'देह' तक ही केंद्रित दिखाई देता है। इसके विपरित प्रवासी 'स्त्री विमर्श' कब–का अपनी चौखट लाँघ विश्व भ्रमण कर रहा है।

आज हम देखते हैं कि विद्वानों द्वारा वैश्विक स्तर पर प्रवासी हिंदी साहित्य का विभाजन मूलतः पाँच भागों में हुआ है। जिनमें गिरमिटिया देश, अमेरिका खंड, युरोपीय देश, मध्यपूर्व देश तथा भारत के पडोसी देश। विद्वानों के मतों–विचारों के आधार पर हमने पहले ही स्पष्ट किया है कि, गिरिमिटिया देशों में लिखा जा रहा

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(5), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

हिंदी साहित्य 'प्रवासी साहित्य' की परिधि में नहीं आता। रही बात मध्यपूर्व देशों की, जिनमें – अरब अमीरात आदि देश आते है उनमें अभी चुनिंदा ही भारतीय है जो हिंदी साहित्य लेखन कर रहे है। भारतीय के पडोसी देशों में हिंदी भाषा का अध्ययन–अध्यापन तो रहा है पर साहित्य लेखन नेपाल के चुनिंदा लेखकों को छोड न के बराबर है। बात आती है अमेरिका और ब्रिटेन की जहाँ भारतीय अधिक मात्रा में बसे है वहाँ वर्तमान में हिंदी साहित्य अधिक मात्रा में लिखा जा रहा है। विदेशों में लिखे जा रहे हिंदी साहित्यकारों की संख्यात्मक दृष्टि से अगर तुलना करें तो पुरूष लेखकों से ज्यादा महिला लेखिकाएँ अधिक मात्रा में लेखन करती हुई दिखाई देती है। यहाँ यह बात सर्वविदित हैं कि जो महिलाएँ हिंदी में प्रवासी साहित्य से जुडी है वे स्वतंत्र रूप से विदेशों में नहीं गयी है। वे अपने पति एवं परिवार के साथ वहाँ गई है। वहाँ रहते हुए अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए अधिकतर लेखिकाओं ने लेखन को माध्यम के रूप में चुना। अपने अनुभवों और आपसी परिवेश को उन्होंने लेखन का विषय बनाया और उसके नए रूप–रंग के साथ साहित्य में अभिव्यक्त किया।

पिछले कुछ वर्षों से नये साहित्य के मूल्यांकन और उसे परखने के लिए नये प्रतिमानों की माँग की जा रही है। आज भी हमारे आलोचक पुराने निकषों–सिद्धांतों पर नये साहित्य का मूल्यांकन करने में लगे हुए है। प्रवासी साहित्य के वर्तमान संदर्भों को अगर हम देखें तो आज जिस जटिल अनुभूतियों से हमारे रचनाकारों की पीढी गुजर रही है उसे हम प्राचीन निकषों पर नहीं परख सकते। कुछ लोग यह मानते हैं कि प्राचीन निकषों के आधार पर आधुनिक साहित्य का मूल्यांकन करना कठिण काम है। यही बात प्रवासी साहित्य पर भी लागु होती है। आज का प्रवासी हिंदी साहित्य हमें नये संसार से परिचित करता है। हम अपनी चार–दीवारों के भीतर रहकर बाहर के चीजों के प्रति अनभिज्ञ रहते है, उसी अनभिज्ञता का वास्तविक ज्ञान हमें प्रवासी साहित्य कराता है। भौतिक सुविधाओं के कारण जहाँ व्यक्ति भावशुन्य होता जा रहा है, वहीं विदेशों में बसें कुछ भारतीय अपने मूल्यों, संस्कृति को बचाने में प्रयासरत हैं। अपनी मिट्टी के प्रति समर्पण भाव उनके साहित्य में दिखाई देता है।

विदेशों में लिखें जा रहें साहित्य जिसे आज हम 'प्रवासी हिंदी साहित्य' नाम से जानते है, वह भारत में लिखे जा रहे साहित्य से संवेदना, परिवेश और सरोकार आदि सभी मायनों में भिन्न है। यही विशेषता प्रवासी हिंदी साहित्य को भारतीय हिंदी साहित्य से भिन्नता प्रदान करती है। प्रवासी साहित्य में वर्णित सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक सरोकार अपनी विशिष्टता लिए हुए है। प्रवासी साहित्य में प्रदर्शित प्रतिमान कहीं से उधार नहीं लिए है, वे एकदम नये है। साथ ही प्रवासी हिंदी साहित्य ने अपनी परिधि (संवेदनागत, भावगत तथा

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(5), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

वैचारिक) को विस्तृत कर वैश्विक पटल पर अपना स्थान निश्चित किया है। प्रवासी साहित्य की तमाम खामियों और खुबियों के चलते तथा विषयगत विविधता, पूर्वाग्रहों को तोडते हुए बदलते मूल्यों को प्रवासी साहित्य दर्ज रहा है।

संदर्भ :

1. प्रवासी हिंदी साहित्य के नये प्रतिमान, संपा. डॉ. दत्ता कोल्हारे, ए. आर. पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ. 30

2. वही, पृ. 31

3. आर्य सुषमा एवं नावरिया अजय, प्रवासी हिंदी कहानी एक अन्तर्यात्रा, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ. 5

4. वर्तमान साहित्य पत्रिका, संपा. कुंवरपाल सिंह और नमिता सिंह, मई 2006,पृ. 20

5. देशांतर : प्रवासी भारतीयों की कहानियां, सं. तेजेंद्र शर्मा, हिंदी अकादमी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, पृ. 13